CHETANA
International Journal of Education
(CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286
शोध-पत्र

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received 18.02.2023 | Reviewed 56.02.2023 | Accepted 02.03.2023

प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन के शिक्षण एवं अधिगम के प्रति अभिधारकों का प्रत्यक्षण

* सोनिका चौहान

मुख्य शब्द - *साइबर क्राइम, उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षक, कारक एवं रोकथाम आदि.*

शोध सार

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन के शिक्षण एवं अधिगम का अध्ययनः यथास्थिति, चुनौतिया एवं अभिधारकों का प्रत्यक्षण से सम्बन्धित हैं इसके लिए वर्णनात्मक एवं आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग कर तथ्यों का संकलन किया गया। न्यादर्श हेतु जयपुर संभाग के जिलों से चयनित उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी राजकीय विद्यालयों से अभिधारको (प्रधानाध्यापकों, शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक एवं शिक्षक–प्रशिक्षक महाविद्यालयो में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षको) का चयन किया गया। शोध के परिणाम एवं निष्कर्ष जो तथ्यों के सारणीयन एवं विश्लेषण से प्राप्त हुए है उनमें सामाजिक अध्ययन के शिक्षण एवं अधिगम के प्रति अभिधारकों के प्रति अभिधारकों का प्रत्यक्षण स्तर उच्च पाया गया। अभिधारकों के अनुसार वे सामाजिक–अध्ययन शिक्षण एवं अधिगम से सन्तुष्ट है, किन्तु कुछ समस्याओं को भी दुष्टिगत किया गया है जिसके लिए सुझावात्मक प्रारूप प्रस्तुत किया है।

प्रस्तावना

मानव के समग्र विकास तथा प्रगति में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा के महत्व को अनादिकाल से स्वीकार किया गया है। **नीतिशतक** में भर्तृहरि ने **विद्याविहिन मनुष्य** को पशु की संज्ञा दे डाली है। इस प्रकार ज्ञान को मनुष्य का तीसरा नेत्र कहा गया है– **ज्ञान मनुष्य तृतीय नेत्र** यही नही मनुष्य के लिए विद्या को मुक्ति का साधन भी माना गया है– **सा विद्या या विमुक्तयें।** उपनिषदों में भी सत्य, ज्ञान, अनन्त, ब्रहा कहकर शिक्षा को आत्मज्ञान तथा ब्रहाज्ञान प्रदान करने वाली प्रक्रिया माना गया है। इस प्रकार राष्ट्र का पतन अथवा उत्थान शिक्षा की आधार भूमी पर ही खड़ा है।

समाज विज्ञानों का विकास

शिक्षा से संस्कार, संस्कार से मनुष्य से समाज उन्नतिशील बनता है। समाज की अपनी ऐतिहासिक, भौगोलिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति, परिस्थिति तथा समस्याएं होती है इन्हीं के आधार पर समाज कभी अलग–अलग तो कभी सामूहिक रूप से, कभी एकीकृत रूप में इन्हें जानने, समझने का प्रयास करता है। इसी प्रयास के अन्तगर्त सामाजिक अध्ययन का विकास हुआ। विद्वानों की मान्यता है कि विश्व में शान्ति की स्थापना, पर्यावरण की शुद्धता, मनुष्य के कल्याण के लिए इस विषय का ज्ञान अति आवश्यक है।

भारत में समाज विज्ञानों से सम्बन्धित विषय–वस्तु का उल्लेख प्रारम्भ में वर्णनात्मक था उसकी कोई मीमांसा नहीं थी तथा माध्यम मौखिक या किन्तु विभिन्न कालों की शिक्षा पद्धति में सामाजिक विज्ञान एक अहम् हिस्सा था। नैतिकता, आध्यात्मिकता, सामाजिक मूल्य आदि भारतीय जीवन दर्शन का पथ–प्रदर्शन कर रहे है और सदियों से जी रहे है। पूर्व ऐतिहासिक भारतीय ग्रन्थ **वेद,**

उपनिषद् स्मृति, पुरान, रामायण, महाभारत तथा कौटिल्य का अर्थशास्त्र, विष्णु शर्मा का पंचतन्त्र आदि प्राचीन भारत की कुछ ऐसी प्रमुख रचनाएं है जो सामाजिक–विज्ञान की नीतियों सिद्धान्तों से सम्बन्ध रखती है। **मध्यकालीन और पूर्व मध्यकालीन** की साहित्यिक परम्पराओं **बुद्ध, जैन, इस्लामिक, भक्ति** सम्बन्धित रचनाओं को भी सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों की रचना माना है।

इन सन्दर्भो को देखते हुए हम कह सकते है कि सामाजिक ज्ञान प्राचीन मध्यकाल से ही भारतीय शिक्षा एंव संस्कृति दोनो का अहम् हिस्सा था।

आधुनिक समय में सामाजिक विज्ञानों का प्रवेश भारत में उपनिवेशवाद के साथ प्रारम्भ हुआ। अग्रेजों ने प्रशासन की सुविधा के लिए इसका अध्ययन किया।

भारत में सामाजिक अध्ययन का औपचारिक प्रतिपादन बेसिक शिक्षा के साथ प्रारम्भ हुआ। 1952 माध्यमिक शिक्षा आयोग की सिफारिश के आधार पर इस विषय को अनिवार्य विषय के रूप में भारत के विद्यालयो में पढ़ाया गया। 1964–66 में दौलत सिंह कौठारी की अध्यक्षता में कोठारी आयोग ने भी भारत में अच्छी नागरिकता और भावात्मक एकीकरण की स्थापना के लिए विषय के प्रभावी कार्यक्रम को अनिवार्य बताया। 1986 की शिक्षा नीति में भी सामाजिक विज्ञान विषय को एकमात्र ऐसा पाठ्यक्रम माना, जो वर्णित मुख्य विषय/घटकों की शिक्षा प्रदान करने का सशक्त उपकरण हैं तथा नई शिक्षानीति (2020) में भी ज्ञान की एकता और अखण्ड़ता को सुनिश्चित करने के लिए बहुविषयक दुनिया एवं वर्तमान भारत की सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए आवश्यक बताया है।

शोध प्रश्न

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक–अध्ययन के शिक्षण एवं अधिग के सम्बन्ध मे अभिधारकों का **प्रत्यक्षण** क्या है?

समस्या कथन

प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन के शिक्षण एवं अधिगम के प्रति अभिधारकों का प्रत्यक्षण

शोध के उद्देश्य

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर **सामाजिक–अध्ययन** शिक्षण एंव **अधिगम की स्थिति** का निम्नांकित संदर्भ में अध्ययन करना।
   - I. सामाजिक अध्ययन की **शिक्षा–नीति में स्थिति**
   - II. सामाजिक अध्ययन की **पाठ्यपुस्तकें एवं पाठ्यक्रम**
   - III. सामाजिक–अध्ययन की **शिक्षण विधियाँ** एवं **उपागम**
   - IV. सामाजिक–अध्ययन के **शिक्षक** (योग्यता, चयन एवं प्रशिक्षण)
   - V. सामाजिक–अध्ययन शिक्षण एवं **अधिगम के संसाधन**
   - VI. सामाजिक–अध्ययन में **विद्यार्थी का मूल्याकंन**
2. उच्च प्राथमिक स्तर **सामाजिक–अध्ययन** शिक्षण एवं अधिगम के प्रति अभिधारकों के **प्रत्यक्षण** का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन का औचित्य

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक–अध्ययन के शिक्षण एवं अधिगम की स्थिति के सन्दंर्भ अभिधारकों के प्रत्यक्षण के सन्दंर्भ में है। क्योकि सामाजिक–अध्ययन का ज्ञान सामाजिक सांस्कृतिक और विश्लेषणात्मक कौशल प्रदान करता है जो कि बढ़ते अन्योन्याश्रित विश्व से सांमजस्य स्थापित करने के लिए आवश्यक है।

शोध परिकल्पना

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक–अध्ययन शिक्षण एवं अधिगम के सम्बन्ध में **अभिधारकों** के प्रत्यक्षण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श

इस शोध पत्र में न्यादर्श निम्नांकित है –

सारणी संख्या 1.1.

क्र.स.	अभिधारक	जयपुर संभाग जिले					
		जयपुर	दौसा	अलवर	झुन्झुनू	सीकर	योग
1.	प्रधानाध्यापक	10	10	10	10	10	50
2.	शिक्षक	20	20	20	20	20	100

शोध विधि

प्रस्तुत शोध की प्रकृति एव उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शोध समस्या हेतु वर्णनात्मक आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी प्रविधि

इस शोध में निम्नांकित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है –

सारणी संख्या 1.2.

क्र.स.	सांख्यिकी प्रविधियां
1.	प्रतिशत
2.	औसत प्रतिशत
3.	काई–वर्ग
4.	प्रत्यक्षण स्तर सूचक

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नांकित स्वनिर्मित उपकरणो का प्रयोग किया गया है–

सारणी संख्या 1.3.

क्र.स.	अभिधारक	उपकरण (स्वनिर्मित)
1	प्रधानाध्यापक	प्रश्नावली
2.	शिक्षक	प्रश्नावली

1.1. दत्त विश्लेषण एवं व्याख्या –

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक–अध्ययन शिक्षण एवं अधिगम की स्थिति सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण निम्नांकित रूप से किया गया है–

सारणी संख्या 1.4.

क्र.स.	सामाजिक अध्ययन के विभिन्न आयाम	प्रधानाध्यापक	शिक्षक	प्रत्यक्षण स्तर

1.	नीतिगत दस्तावेजों में सामाजिक अध्ययन	88.25	61.42	74.83 (उच्च)
2.	सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक	44.27	68.52	56.39 (उच्च)
3.	शिक्षण विधि/उपागम	55	55.45	55.22 (उच्च)
4.	सामाजिक अध्ययन के शिक्षक एवं उनकी योग्यता	68.83	64.58	66.70 (उच्च)
5.	विद्यार्थी	80	54.66	67.53 (उच्च)
6.	अधिगम संसाधन	64.83	36.63	50.73 (उच्च)
7.	मूल्यांकन	79.25	56.75	68 (उच्च)
औसत प्रतिशत		**68.63 (उच्च)**	**56.85 (उच्च)**	**62.74 (उच्च)**

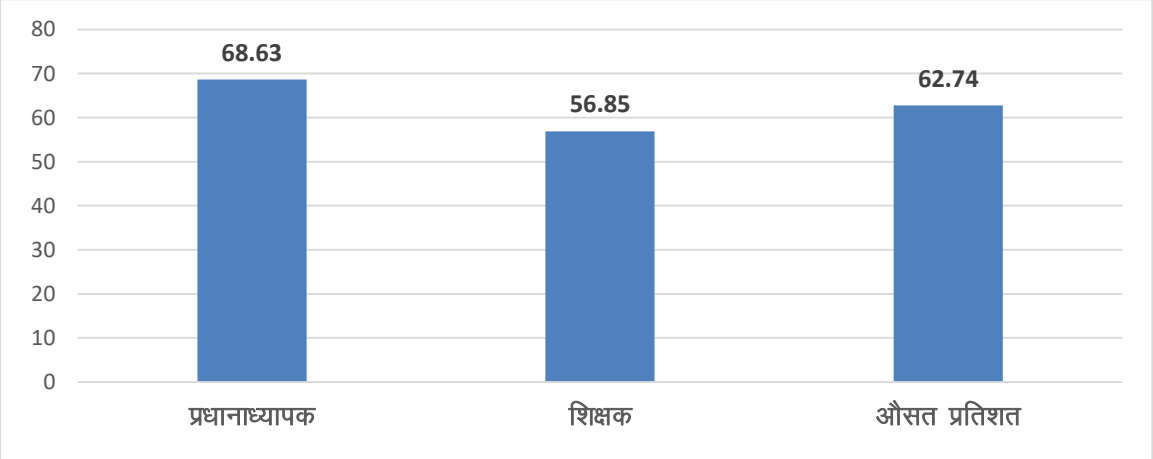

सारणी संख्या 1.4 तथा आरेख संख्या 1.4 से स्पष्ट होता है कि 62.74 औसत प्रतिशत अभिधारक उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण अधिगम के समस्त आयामों से सन्तुष्ट है तथा सभी आयामों के प्रति अभिधारकों का प्रत्यक्षण स्तर भी उच्च पाया गया है। किन्तु अधिगम संसाधन शिक्षण विधियों के प्रयोग एवं पाठ्यक्रम/पाठ्यपुस्तकों के प्रति प्रत्यक्षण का स्तर निम्न पाया गया है तुलनात्मक रूप से अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों के प्रत्यक्षण उच्च होते हुए भी दोनों में कुछ अन्तर दृष्टिगत है।

शून्य परिकल्पना

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक–अध्ययन शिक्षण एवं अधिगम के सम्बन्ध में **प्रधानाध्यापकों** और **शिक्षकों** के प्रत्यक्षण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 1.5

प्रधानाध्यापक तथा शिक्षकों के प्रत्यक्षण का संगणित काई स्क्वायर मान

क्र.स.	समूह	आवृत्ति			संगणित काई स्क्वायर मान
		हाँ	नही	कुल	
1.	प्रधानाध्यापक	34	16	50	2.66468
2.	शिक्षक	5	45	100	
	कुल	89	61	150	असार्थक (NS)

df = 1 P =0.1265 0.05 सारणीमान – 3.8414

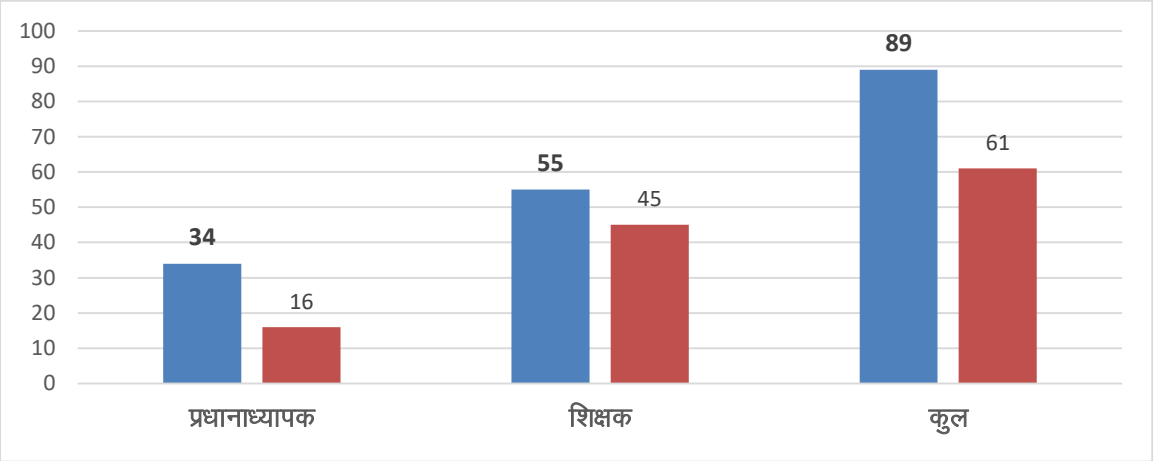

उपरोक्त सारणी संख्या 1.5 तथा आरेख 1.2 से स्पष्ट है कि संगणित काई–स्क्वायर मान सारणीमान से कम है। अतः यह शून्य परिकल्पना (''उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण एवं अधिगम के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापक और शिक्षकों के प्रत्यक्षण मे कोई सार्थक अन्तर नही है।'') स्वीकार की जाती है।

सारणी संख्या 1.6

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण एवं अधिगम की स्थिति **नीतिगत दस्तावेजों** के संबध में प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के प्रत्यक्षण का औसत प्रतिशत एवं काई स्क्वायर

क्र.सं.	**समूह**	**औसत प्रतिशत**			**संगणित काई स्क्वायर मान**
		हाँ	नहीं	कुल	11.5714

1	प्रधानाध्यापक	44	06	50	
2	प्रधानाध्यापक	61	39	100	
3	कुल	105	45	150	सार्थक (S)

df = 1 P = 0.006697 0.05 पर सारणीमान – 3.84

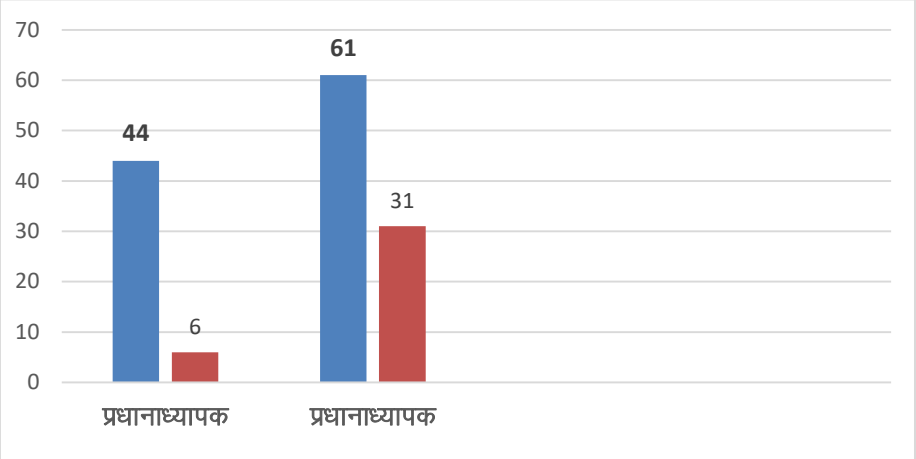

उपरोक्त सारणी संख्या 1.6 तथा आरेख 1.2 से स्पष्ट है कि संगणित काई स्क्वायर मान **11.5714** सारणीमान से अधिक है। अतः यह शून्य परिकल्पना (''उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन की नीतिगत दस्तावेजों में स्थिति के संबध में **प्रधानाध्यापको और शिक्षकों** के प्रत्यक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है। अस्वीकार की जाती है।

सारणी 1.7

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक–अध्ययन की पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के प्रत्यक्षणका औसत प्रतिशत एवं काई स्क्वायर

क्र.सं.	**समूह**	**औसत प्रतिशत**			**संगणित काई स्क्वायर मान**
		हाँ	नहीं	कुल	
1	प्रधानाध्यापक	22	28	50	8.73068
2	शिक्षक	69	31	100	
3	कुल	91	59	150	सार्थक (S)

df = 1 P = 0.003129 0.05 पर सारणीमान – 38414

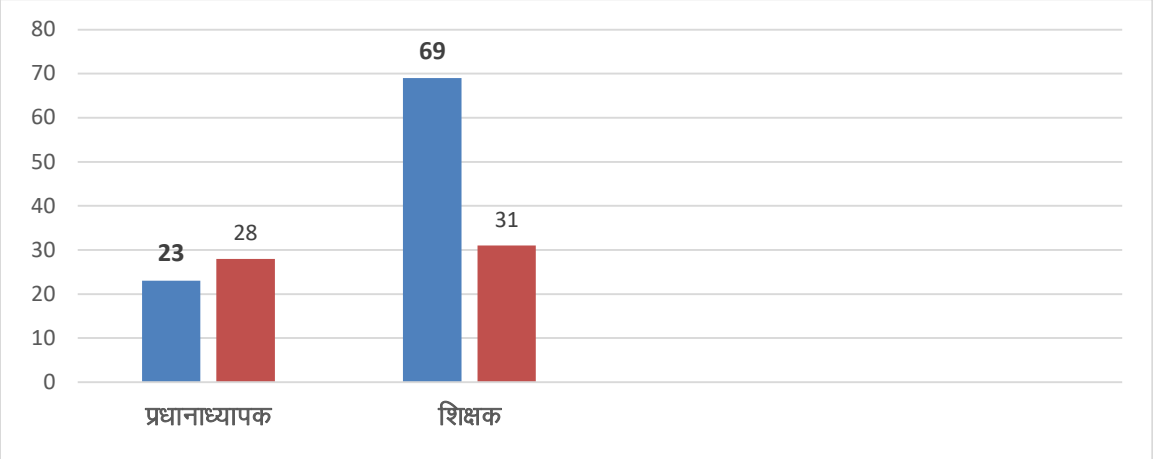

उपरोक्त सारणी संख्या 1.7 एवं आरेख 1.3 से स्पष्ट है कि संगणित काई स्क्वायर मान **8.73068** सारणीमान से अधिक है। अतः यह शून्य परिकल्पना (''उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक–अध्ययन की पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में **प्रधानाध्यापकों** और **शिक्षको** के प्रत्यक्षण में सार्थक अन्तर नही है।'') अस्वीकार की जाती है।

सारणी संख्या 1.8

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक–अध्ययन शिक्षण एवं अधिगम की **शिक्षण विधि/उपागम** के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के प्रत्यक्षण का औसत प्रतिशत एवं काई स्क्वायर

क्र. सं.	समूह	औसत प्रतिशत			संगणित काई स्क्वायर मान
		हाँ	नहीं	कुल	
1	प्रधानाध्यापक	28	22	50	9.0134
2	शिक्षक	55	45	100	
3	कुल	83	67	150	सार्थक (S)

df = 1 P = 0.9075 सारणीमान – 3.8414

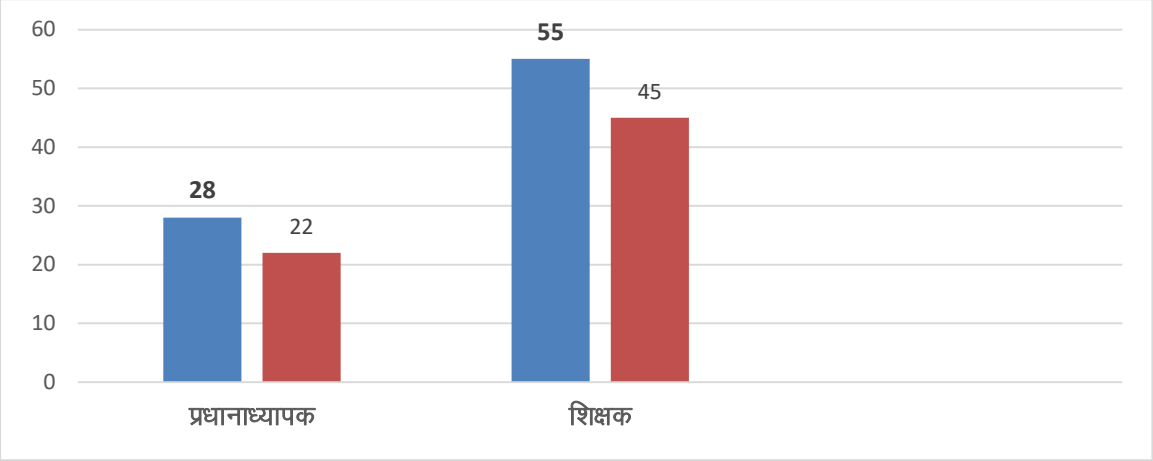

उपरोक्त सारणी संख्या 1.8 एव आरेख 1.4 से स्पष्ट है कि संगणित काई स्क्वायर मान **9.0134** है जो कि सारणीमान से अधिक है। अतः यह शून्य परिकल्पना (''उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण एवं अधिगम की शिक्षण विधि/उपगाम के सम्बन्ध में **प्रधानाध्यापकों** और **शिक्षकों** के प्रत्यक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है'') अस्वीकार की जाती है।

सारणी संख्या 1.9

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक–अध्ययन के **शिक्षक एवं उनकी योग्यता** के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के प्रत्यक्षण का औसत प्रतिशत एवं काई–स्क्वायर

क्र. सं.	समूह	औसत प्रतिशत			संगणित काई स्क्वायर मान
		हाँ	नहीं	कुल	
1	प्रधानाध्यापक	34	16	50	0.235479
2	शिक्षक	64	36	100	
3	कुल	98	52	150	सार्थक (S)

df = 1 P = 0.6275 0.05 पर सारणीमान – 3.8414

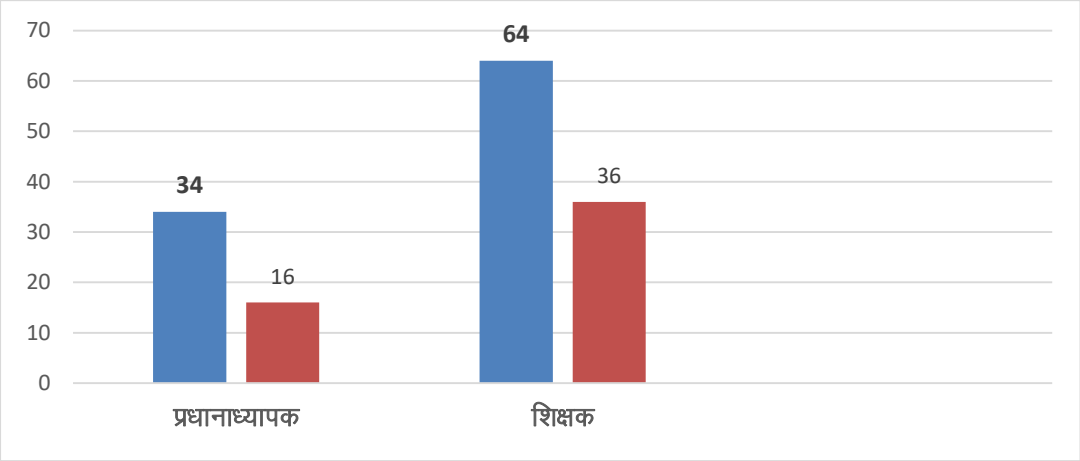

उपरोक्त सारणी संख्या 1.9 एव आरेख 1.5 से स्पष्ट है कि संगणित काई स्क्वायर मान **0.235479** है जो कि सारणीमान से कम है। अतः यह शून्य परिकल्पना (''उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण एवं उनकी योग्यता के सम्बन्ध में **प्रधानाध्यापकों** और **शिक्षकों** के प्रत्यक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है'') स्वीकार की जाती है।

सारणी संख्या 1.10

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक–अध्ययन के विद्यार्थियों के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के प्रत्यक्षण का औसत प्रतिशत एवं काई–स्क्वायर

क्र.सं.	समूह	औसत प्रतिशत			संगणित काई स्क्वायर मान
		हाँ	नहीं	कुल	
1	प्रधानाध्यापक	40	10	50	9.63146
2	शिक्षक	54	46	100	
3	कुल	94	56	150	सार्थक (S)

df = 1 P = 0.001913 0.05 पर सारणीमान – 3.8414

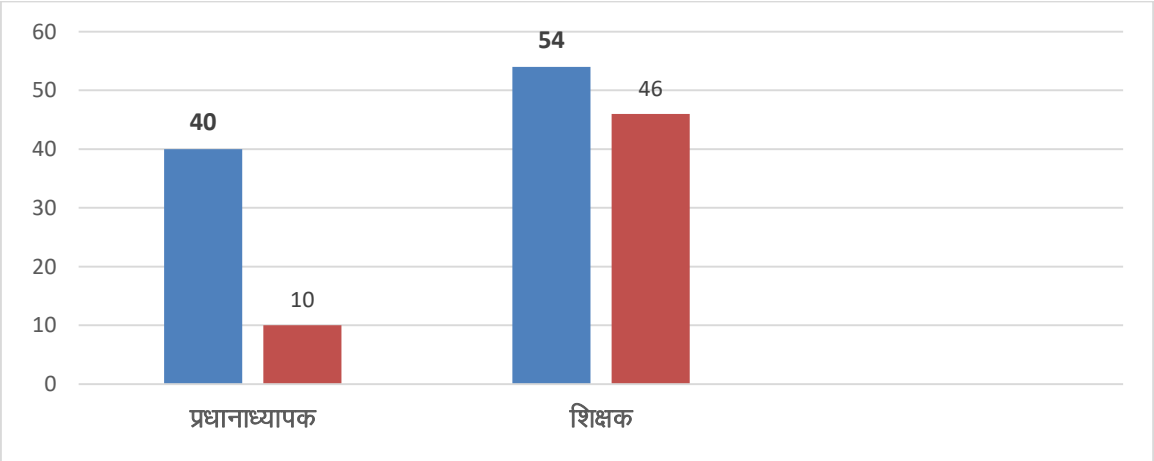

उपरोक्त सारणी संख्या 1.10 एव आरेख 1.6 से स्पष्ट है कि संगणित काई स्क्वायर मान **9.63146** है जो कि सारणीमान से अधिक है। अतः यह शून्य परिकल्पना (''उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन के विद्यार्थियों के सम्बन्ध में **प्रधानाध्यापकों** और **शिक्षकों** के प्रत्यक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है'') अस्वीकार की जाती है।

सारणी संख्या 1.11

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक–अध्ययन **शिक्षण–अधिगम के संसाधन** के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के प्रत्यक्षण का औसत प्रतिशत एवं काई–स्क्वायर

क्र. सं.	समूह	औसत प्रतिशत			संगणित काई स्क्वायर मान
		हाँ	नहीं	कुल	
1	प्रधानाध्यापक	33	17	50	12.0773

2	शिक्षक	36	64	100	
3	कुल	69	81	150	सार्थक (NS)

df = 1 P = 0.0005104 सारणीमान – 3.8414

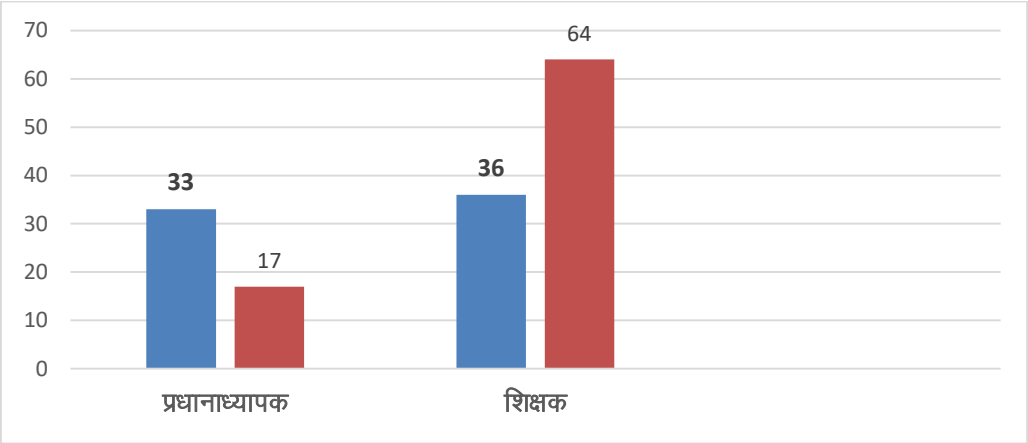

उपरोक्त सारणी संख्या 1.11 एव आरेख 1.7 से स्पष्ट है कि संगणित काई स्क्वायर मान **12.0773** है जो कि सारणीमान से अधिक है। अतः यह शून्य परिकल्पना (''उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षक अधिगम के संसाधन के सम्बन्ध में **प्रधानाध्यापकों** और **शिक्षकों** के प्रत्यक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है'') अस्वीकार की जाती है।

सारणी संख्या 1.12

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक–अध्ययन में मूल्यांकन के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के प्रत्यक्षण का औसत प्रतिशत एवं काई–स्क्वायर

क्र.सं.	**समूह**	**औसत प्रतिशत**			**संगणित काई स्क्वायर मान**
		हाँ	नहीं	कुल	
1	प्रधानाध्यापक	39	11	50	6.94737
2	शिक्षक	56	44	100	
3	कुल	95	55	150	सार्थक (S)

df = 1 P = 0.008394 0.05 पर सारणीमान – 3.8414

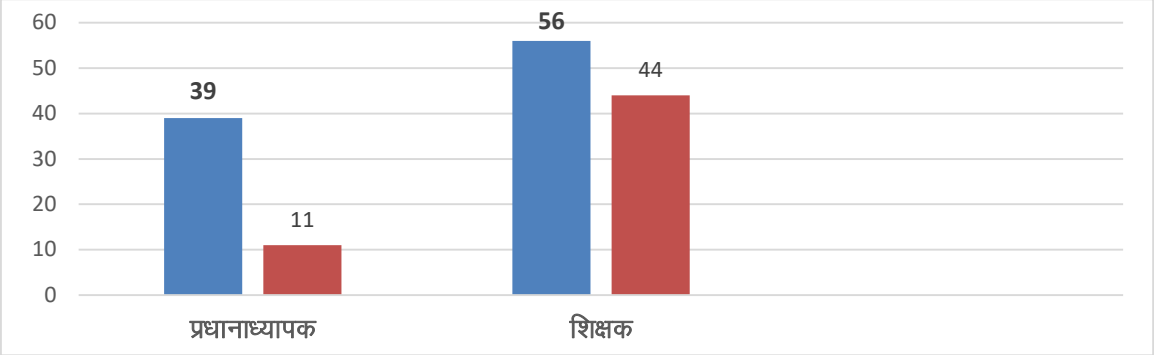

उपरोक्त सारणी संख्या 1.12 एंव आरेख 1.8 से स्पष्ट है कि संगणित काई स्क्वायर मान **6.94737** है जो कि सारणीमान से अधिक है। अतः यह शून्य परिकल्पना (''उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन के मूल्यांकन में **प्रधानाध्यापकों** और **शिक्षकों** के प्रत्यक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है'') अस्वीकार की जाती है।

शून्य परिकल्पना जांच एंव निष्कर्ष

निम्नांकित शून्य परिकल्पनाएं स्वीकृत हुई –

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक–अध्ययन शिक्षण एवं अधिगमके सम्बन्ध में प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के प्रत्यक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है। यह शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाी है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर सामजिक–अध्ययन के **शिक्षक एवं उनकी योग्यता** के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के प्रत्यक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है।

निम्नांकित शून्य परिकल्पनाएं अस्वीकृत हुई –

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण एवं अधिगम की स्थिति **नीतिगत दस्तावेजों** के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के प्रत्यक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर सामाजिक अध्ययन की **पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यक्रम** के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के प्रत्यक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षक एवं अधिगम की **शिक्षण विधि/उपागम** के प्रत्यक्षण के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नही है।
4. उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ध्न के **विद्यार्थियों** के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के प्रत्यक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है।
5. उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक–अध्ययन **शिक्षण अधिगम के संसाधन** के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के प्रत्यक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है।
6. उच्च प्राथमिक स्तर पर समाजिक–अध्ययन में **मूल्यांकन के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के प्रत्यक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है।**

सन्दर्भ

- शर्मा, बी.एन (2008), **'भारत और शिक्षा'** आगराः साहित्य प्रकाशन।
- मदान, पूनम, पाण्डेय, रामशक्ल (2016) **'भमकालीन भारत और शिक्षा'** आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
- बी.ई. एस–142 (2017), **'सामाजिक विज्ञान शिक्षण'** नई दिल्लीः इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय। (इग्नू)
- भार्गव लक्ष्मी (2009), **'शिक्षा के सामाजिक परिपेक्ष्य'** वाराणसीः विजय प्रकाशन मन्दिर।
- गैरेट, हेनरी ई (1989) **'शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग'** नई दिल्लीः कल्याणी पब्लिशर्स।

- श्रीवास्तव, रोमा (2018), **'सामाजिक अध्ययन का शिक्षण शास्त्र'** कानपुरः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
- विद्यालय पाठ्य पुस्तक–सामाजिक विज्ञान कक्षा 6,7,8 जयपुरः राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल।
- प्रवाह (मार्च 2018) चतुमार्सिक पत्रिका
- प्राथमिक शिक्षक (अप्रेल 2018)
- www.ncert.nic.in
- www.wikipedia.com
- www.shodhganga.com
- www.book.google.com.in

Corresponding Author

*** सोनिका चौहान,** *शोधार्थी*

शिक्षा संकाय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

Email-sonikachouhan1978@gmail.com, Mob.-8890222723